आज़ाद फाउण्डेशन

आज़ाद परिंदे

न्यूज़लेटर (सीमित वितरण हेतु) आज़ाद फाउण्डेशन, वर्ष 2023 अंक 21

प्रिय पाठकों,

8 मार्च 2023 के दिन हमने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। आज़ाद परिंदे के हर अंक से हम प्रयास करते हैं कि आज़ाद से जुड़े यूथ और फेमिनिस्ट लीडर्स, ट्रेनीस और ड्राइवर्स के प्रासंगिक मुद्दों पर विचार आप तक पहुँचाएँ। इस अंक में देरी के कारण हम आपके धैर्य के लिए आभारी हैं। हम आशा करते हैं कि आप अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के भाव को समझते हुए इन विचारों को पढ़ेंगे और हमारे जेंडर समानता के उद्देश्य से जुड़ेंगे।

हेल्लो, नमस्कार, आदाब!

मार्च में हमने अंतर्राष्ट्रीय कामकाजी महिला दिवस मनाया। इस दिन, सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'हैप्पी विमेंस डे' के संदेशों से भर गए। हमने देखा कि इस दिन कई सारे ज्वैलरी, कॉस्मेटिक्स, आदि ब्रांड्स ने अपने सामान पर छूट भी दी। लेकिन, क्या अंतर्राष्ट्रीय कामकाजी महिला दिवस का केवल यही महत्त्व रह गया है?

एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में मैं कई वर्षों से आप जैसे दोस्तों के साथ हमारे अधिकारों के लिए मार्च महीने में कई अभियानों में शामिल होती आई हूँ। केवल महिला दिवस ही नहीं, मार्च का पूरा महिना हमारे लिए हमेशा विशेष रहेगा। लेकिन, शायद हमें इस खास दिन के इतिहास को और महिला आन्दोलन में शामिल रहे लोगों के योगदान को याद करने की ज़रूरत है। और यह समझने की ज़रूरत है कि पितृसत्ता के खिलाफ लड़ाई अभी भी जारी है।

यदि हम इस दिन के इतिहास को याद करें तो कई साल पहले, जब यूरोप और अमेरिका जैसे पश्चिमी देशों में औद्योगिक क्रांति शुरू हुई थी, तब बढ़ते औद्योगीकरण की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बच्चों और महिलाओं के सस्ते श्रम का इस्तेमाल किया जाने लगा। इस दौरान, सदियों से महिलाओं के खिलाफ होता आ रहा उत्पीड़न और असमानता, सामूहिक आंदोलन में तब्दील हो रहा था। यूरोप और अमेरिका में महिला श्रमिकों ने काम के समान अधिकार, समान वेतन, मतदाता अधिकार, स्वस्थ कामकाजी माहौल और कार्यकर्ताओं की सामाजिक सुरक्षा की मांग उठाई। अठारहवीं शताब्दी में कई आंदोलन और मंचों पर यह मांगे सामने रखी गयी, जैसे 1857 में अमेरिका में '16 के बजाय 10 घंटे काम' की मांग के लिए हड़ताल, 1870 में महिलाओं के नेतृत्व में किया गया पेरिस कम्यून, 1902 में अमेरिका की इक्वल सर्फेज लीग जिसके द्वारा महिलाओं ने मतदान के अधिकार की मांग शुरू की। वर्ष 1910 में, क्लारा जेटकिन ने कोपेनहेगन के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का नेतृत्व किया और 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय कामकाजी महिला दिवस के रूप में घोषित किया। साल 1911 से, महिलाओं के साथ होने वाले सभी भेदभावों के खिलाफ और उनके बराबर अधिकारों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महिला दिवस मनाया जा रहा है। 1917 में रुसी महिलाओं की "रोटी और शांति" (bread and peace) हड़ताल में उन्होंने सम्मानजनक जीवन की मांग की।

पश्चिमी देशों में ही नहीं, भारत में भी महिला आन्दोलन ने वर्ष 1930 से आकार लेना शुरू किया। 1950 से हम भारत में अंतर्राष्ट्रीय कामकाजी महिला दिवस मना रहे हैं जिसमे विभिन्न महिला संगठन महिलाओं पर होने वाले हर तरह के भेदभाव के खिलाफ आवाज़ उठाते हैं और विभिन्न आंदोलनों का आयोजन करते हैं। 1980 के मथुरा बलात्कार मामले के बाद कई शहरों और गांवों की महिलाओं द्वारा विरोध प्रदर्शन से देश के बलात्कार कानूनों में संशोधन किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के सन्दर्भ में 'कामकाजी' शब्द का उपयोग करने पर दुनिया भर में बहस उठी। इसके पक्ष में ये बहस है कि सभी महिलाएं कामकाजी हैं और अपने श्रम– वैतनिक और अवैतनिक, से देश की अर्थव्यवस्था में योगदान करती हैं।

तो दोस्तों, आज जब हम अपनी एकता और अधिकारों का जश्न मनाते हैं, हम सभी पितृसत्तात्मक भेदभाव के खिलाफ संघर्षों को न भूलें। आइए, महिला दिवस के महत्व को याद करते हुए हम एकजुट होकर अपनी मांगे उठाएं।

- महिलाओं के लिए कौशल शिक्षा और गरिमा के साथ रोज़गार के अवसर (विशेष रूप से गैर–पारंपरिक अवसरों में)!
- कार्यस्थल पर महिलाओं के लिए सहायक वातावरण!
- निजी और सार्वजनिक स्थानों पर हिंसा की रोकथाम!
- घरेलू काम की ज़िम्मेदारी का समान वितरण!

जाह्नवी, आज़ाद किशोरी लीडर, दिल्ली

• मौसुमी सरकार, सीनियर डिस्ट्रिक्ट लीड, आज़ाद फाउंडेशन, कोलकाता

आगे बढ़ना सीख लिया है मैंने

आज़ादी एक जंग है,
मगर लड़ना सीख लिया है मैंने
आज़ाद में जुड़कर,
आगे बढ़ना सीख लिया है मैंने।
आगे ही बढ़ना है,
ये सोच लिया है मैंने।
पीछे नहीं जाऊंगी,
ये सोच लिया है मैंने।
अब किसी की बातों में नहीं आऊंगी
ये सोच लिया है मैंने।
अब अपने लिए कुछ कर दिखाऊंगी
ये सोच लिया है मैंने।
ज़िम्मेदारी संग नारी भर रही है उड़ान
न कोई शिकायत न कोई थकान।
बराबरी का साथ निभाएं महिलाएँ,
अब आगे आएं महिलाएँ।
महिला है शक्ति स्वरूप,
सभी हो जाओ जागरूक।

• शालू, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

मैं अब सक्षम और सशक्त हूँ

मैं आज़ाद में जुड़ने से पहले भी कार्य करती थी अपना घर चलाने के लिए। लेकिन मैंने आज़ाद से जुड़ने पर बहुत कुछ सीखा कि एक महिला के क्या अधिकार हैं, उसके अधिकारों के लिए कौन–कौन से कानून बनाए गए हैं। मैं अब अपने आप में एक सशक्त नारी हूँ, अपने निर्णय लेने में सक्षम हूँ। मेरा विचार अब ये है कि मेरी बेटियों को भी अपने निर्णय खुद लेने का अधिकार है, चाहे वो शिक्षा हो, बाहर जाकर काम करना हो, उनका पहनावा हो या फिर अपना जीवनसाथी चुनना हो। मुझमे ये हौसला आया है कि मैं उनके हर निर्णय में उनके साथ रहूँ। और उनके लिए ही नहीं, मेरे संपर्क में आने वाली हर महिला या लड़की के लिए मैं सदा ये प्रयास करूंगी।

• भारती सैन, फेमिनिस्ट लीडर, जयपुर

साक्षी पवार, आज़ाद किशोरी लीडर, दिल्ली

मिलकर चलाऊँ जीवन की गाडी

मुझे मेरे पति ने पूरा समर्थन किया है इसलिए मैं गाड़ी सीख रही हूँ। मुझे बहुत अच्छा लगता है आज़ाद फाउंडेशन में गाड़ी सीखना। और मैं अपने पति के साथ मिलकर घर चलाना चाहती हूँ ताकि मेरे बच्चों का भविष्य भी सफल हो सके।

• गुलशन देवी, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, ईस्ट दिल्ली

अपने डर पर काबू किया

मुझे पहले बाहर निकलने में अच्छा नहीं लगता था। फिर मैंने आज़ाद से जुड़कर सेल्फ डिफेंस, जेंडर, कम्युनिकेशन, अंग्रेजी, फर्स्ट–ऐड, आदि सीखा जो मेरे लिए बहुत उपयोगी रहा। मैंने इन क्लासों में अपने अधिकारों के बारे में जाना और मेरा डर भी खत्म हुआ। अब मैं अपनी ज़िंदगी अपने तरीके से जीती हूँ।

• प्रिया, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, ईस्ट दिल्ली

मेरी उड़ान-मेरी पहचान

मैं चली हूँ तोड़ जंज़ीरों को, आज़ादी की ओर लहरा के अपने पंख। चली ड्राइविंग सीख के, चलूंगी सड़क पर बिना किसी के सहारे।

मैं चली हूँ तोड़ जंज़ीरों को, समाज और परंपराओं की सोच तोडूंगी, मैं ड्राइविंग करके रहूँगी। मैं एक आज़ाद पंछी बनके रहूँगी।

• रूपा, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

बनूँगी सशक्त ड्राईवर

बंधनों में कब तक रहूँ, कब तक उठाऊँ इस परंपरा के बोझ को? अब बस बहुत हुआ, अब न सहूँगी घर परिवार व समाज के इस नियम को।

मेरा भी अधिकार है, खुली हवा में सांस लू, खुद के लिए आवाज़ उठा, बनाउँगी खुद की पहचान।

आज़ाद से जुड़कर बनूंगी एक सशक्त ड्राईवर खुद की पहचान बनाकर अब ये संसार जानेगा मुझे खुद के नाम से।

• चंपा झान, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

महिलाओं को सम्मान

अकाल पड़ा है पूरी दुनिया में प्रेम, आदर और सम्मान का क्यूँकि लेना सभी चाहते हैं महिलाओं से सम्मान, पर देना कोई नहीं चाहता महिलाओं को सम्मान।

अब यही सोच तो बदलनी है कि महिला भी पा सकती है सम्मान, जी सकती है वह भी अपनी ज़िंदगी को जो वो अब तक घुट–घुट कर जीती आई है।

• सीमा, फेमिनिस्ट लीडर, नॉर्थ दिल्ली

अब मैं बदल गई...

अब दुप्पटा मैं लेती नहीं
समझौता करना मुझे आता नहीं
घर में बैठना मुझे आता नहीं
कैद में रहना मुझे आता नहीं
क्यूंकि अब मैं बदल गई।
कमाऊँगी स्वाभिमान से, रहूँगी सम्मान से,
अपने अधिकारों को पहचानना अब मुझे
आ गया
क्यूंकि अब मैं बदल गई...

• शगूफा, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नॉर्थ दिल्ली

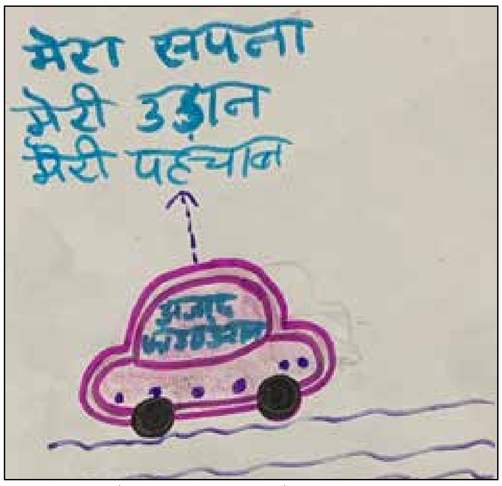

रूपा, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

उमा, ममता, सिमरन, विमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

बबीता, विमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

गिर कर खुद संभली

मैंने जब ड्राइविंग जोइन की, मेरी मम्मी कभी–कभी गुस्सा करती थी कि क्या करेगी गाड़ी सीख कर। आज़ाद से जुड़कर मुझे बाहर आने–जाने का मौका मिला। मैंने सड़को पर आना जाना सीखा। जब पहली बार गाड़ी चलाई तो डर भी लगा कि चोट न लग जाए पर फिर भी गाड़ी चलाई। और गाड़ी चलाते समय गिरी भी पर अपने आप संभली। मुझे पहले लगा कि मैं कभी गाड़ी नहीं चला पाऊंगी। पर अब मुझे ऐसा लगता है कि मैं कुछ भी कर सकती हूँ। अब मुझे किसी और पर निर्भर नहीं रहना। मैं चाहती हूँ कि मैं खुद कमाऊं और खर्च करूं।

• वर्षा बैनिवाल, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, जयपुर

लड़की, आगे बढ़ो !

लड़की! लड़की! आगे बढ़ो! यह हिचकिचाहट क्यूँ? लड़की, यह झिझक क्यूँ? यह उदासी क्यूँ? क्या पारिवारिक माहौल तुमको पीछे खींच रहा है या समाज? नहीं! तुम्हारी हिचक ही तुम्हारी बाधा है!

लड़की! क्या तुम पछता रही हो कि तुमने एक औरत के रूप में इस धरती पर जन्म लिया? पछताओ मत। तुमने एक लड़की के रूप में जन्म लेके इस धरती का गर्व बढ़ाया है, यह मत भूलना!

क्या ज़िंदगी तुमको डरा रही है? उससे डरो मत!

तुम थोड़ा आगे चलके देखो ज़िंदगी अपने आप तुमको एक अच्छा रास्ता दिखाएगी।

लड़की! तुम पिंजरे में क्यूँ बंद हो? बाहर आओ और एक पक्षी की तरह अपने पंख फैलाओ, लड़की! तुम्हें अपने जीवन का अर्थ समझ में आएगा।

• के वेल्विज्ही, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, चेन्नई

पंख फैराना जान गयी हूँ

सुबह उठते ही घर के सारे काम करना, पति और सास–ससुर की सेवा करना बच्चों को तैयार करना, सबके लिए खाना बनाना बच्चों को स्कूल ले जाना, लेकर आना और वापस घर के कामों में लग जाना ये करते–करते भूल गयी थी खुद के लिए जीना। अब हो गयी बर्दाश्त की हद्द पार,

बाहर जाकर करुँगी मैं भी काम
कमाऊँगी पैसा बनाऊँगी अपना नाम
और पंख फैलाए भरूँगी ऊँची उड़ान

एक बंद पिंजरे में रहती थी पर उस पिंजरे को तोड़ गिराना सीख गयी हूँ।

• पूनम, फेमिनिस्ट लीडर, नॉर्थ दिल्ली

जिद है सपने साकार करने की...
मुझे खुद से वादा करने दो,
छोटी-छोटी बातों में नहीं टूटूँगी।
जो कुछ हुआ सो हो जाने दो,
मुझे फिर से मज़बूत होना है।
मुझे अपनी ज़िम्मेदारी खुद लेनी है
अपने माता-पिता का भी ख्याल रखना है।
अपने पैरों पर खड़ी हो जाऊँ,
अपने सपनों को फिर से पूरा करने के लिए।

• पिउ दास, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ कोलकाता

अपनी पहचान बनाइ

पहले मैं घर से अकेली कहीं भी नहीं जा सकती थी। पर अब मैं अकेली कहीं भी आ–जा सकती हूँ। मेरे पहनावे में भी बदलाव आया है। मुझे देखकर मेरे पति में भी कुछ बदलाव आए हैं। और मोहल्ले में भी मैंने अपनी पहचान बना ली है। और मेरे सामने जो भी चुनौतियाँ आई मैं उन सब का सामना कर आगे बढती रही।

• आशा, फेमिनिस्ट लीडर, ईस्ट दिल्ली

सशक्तिकरण की राह

सशक्तिकरण जानने के बाद मुझे समझ में आया कि मेरा भी इस संसार में कोई अस्तित्व है। मैं भी इस समाज का एक हिस्सा हूँ। मुझे भी स्वतंत्रता का जीवन जीने का अधिकार है। सशक्तिकरण हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। सशक्तिकरण हमें एक नई आशा देता है।

• पूनम, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

महिला और पुरुष में कोई अंतर होगा?

महिला और पुरुष के बीच कोई भेदभाव नहीं होगा अगर हम दुनिया चला सकते हैं– हाथ में लिए हाथ। क्या एक महिला और एक पुरुष के बीच कोई अंतर होगा? मैं बच्चों का पालन–पोषण करता हूँ और तुम स्टीयरिंग पकड़ो। यदि आप बाहर काम कर सकते हैं–तो हम भी कर सकती हैं– हम आज की महिला हैं। क्या आपको लगता है कि महिलाएं डरी हुई हैं? वे कार को भी संभाल सकती हैं इसमें कोई शक नहीं।

• प्रोमिला दास, फेमिनिस्ट लीडर, साउथ कोलकाता

रितिका, विमेन विद व्हील्स ट्रेनी, ईस्ट दिल्ली

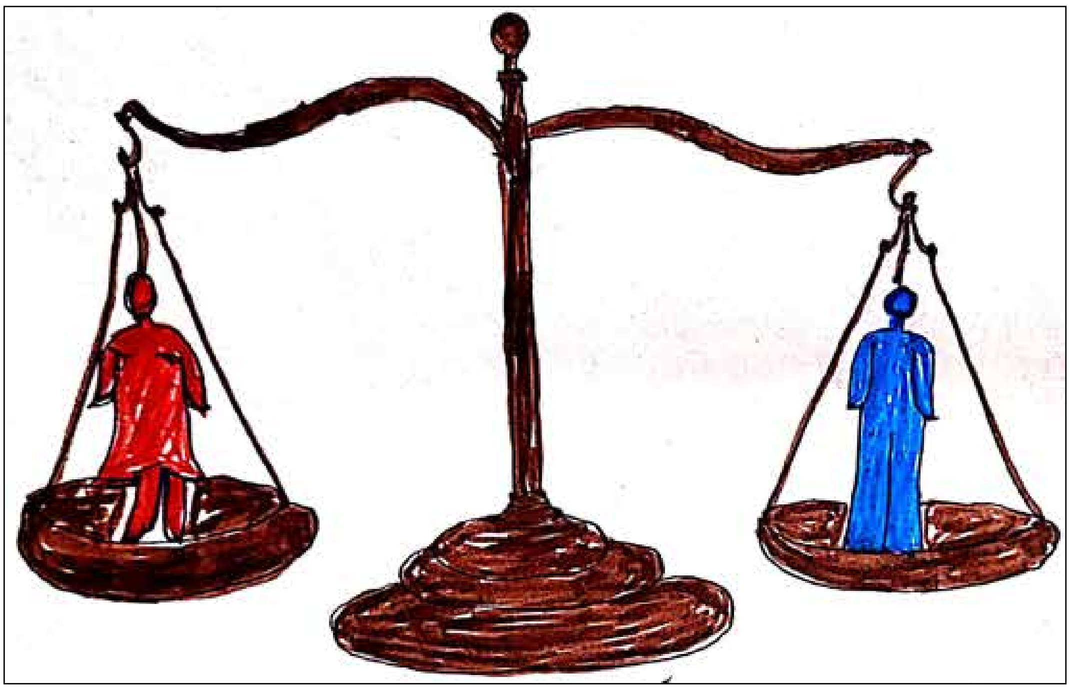

बबली, विमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नॉर्थ कोलकाता

हर औरत की चाह

हर औरत की चाह, उसे मिले मान और बराबर का सम्मान। आओ अपनी भी बनाएँ पहचान, करें काम और सपने साकार। मेरी पहचान–मेरा काम। घर का काम काम तो है पर पहचान नहीं। जॉब से ही मिली मुझे पहचान, मेरा मान–सम्मान। आओ हम सब काम करें सपनो को साकार करें, खुलकर जिएं, सांस लें, निर्भर बनें शान से।

• वंदना, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नॉर्थ दिल्ली

समानता की शुरुवात खुद से

मैं आज़ाद फाउंडेशन से जुड़ने से पहले बहुत आलसी व निठल्ला व्यक्ति था। मुझे घर के कार्य करने की बिल्कुल इच्छा नहीं करती थी। मैं आज़ाद से जुड़ने के बाद एक ट्रेनिंग कैंप में गया। वहां से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। मुझे समझ में आया कि महिलाओं के साथ–साथ घर के कामों की मेरी भी ज़िम्मेदारी है। फिर मैंने घर के काम करने शुरू किए। मैंने गाय को भी संभालना शुरू किया और मम्मी के साथ गाय का दूध निकालना, गोबर उठाना और सफाई करने में मदद करना भी शुरू किया। जब मम्मी को भी आराम का समय मिल जाता है तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।

• वैभव सावरिया, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, जयपुर

कम्युनिटी क्रेच है समाधान

बच्चों की देखभाल के लिए सामाजिक समर्थन संरचनाओं की आवश्यकता है ताकि बच्चों की देखभाल महिलाओं के नौकरी छोड़ने का कारण न बने। कम्युनिटी क्रेच को बढ़ाना होगा ताकि महिलाएं बिना किसी चिंता के जॉब के लिए जा सकें। बड़े लोगों की मानसिकता को बदलना मुश्किल है। इसलिए युवा लड़कों के साथ अधिक काम किया जाना चाहिए ताकि उन्हें अवैतनिक देखभाल कार्य साझा करने के महत्व के बारे में जागरूक किया जा सके। तभी अगली पीढ़ी की महिलाओं को उन समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा जिनका हम सामना कर रहे हैं।

• रम्या, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, चेन्नई

पुरुषों की भी ज़िम्मेदारी

महिलाओं को आराम करने का, बाहर घूमने व अपनी ज़िंदगी जीने का समय नहीं मिलता। वह पूरा दिन घर के कामों में उलझ कर रह जाती हैं। वह अपने लिए कुछ सोच नहीं पातीं। उनके ऊपर पूरा घर चलाने का बोझ रहता है। पुरुष उनके काम में हाथ भी नहीं बटाते। पुरुषों को घर के काम में हाथ बटाना चाहिए जिससे महिलाएं अपने लिए भी कुछ सोच सकें।

• सत्यम, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, दिल्ली

पैसे पर अधिकार

घर और बाहर दोनों जगह बराबरी के लिए ज़रूरी है कि महिलाएं भी पैसे कमाएं और उस पैसे पर उनका अधिकार हो। पैसे से हमारी ज़िंदगी कुशल बनती है क्यूंकि हम अपनी और अपने परिवार की ज़रूरत की चीजें और पढाई व स्वास्थ्य सम्बंधित खर्चे कर सकते हैं। और हमें कुछ पैसे सेविंग में भी रखने चाहिए ताकि ज़रूरत के समय में काम आ सकें।

• चांदनी, आज़ाद किशोरी लीडर, दिल्ली

आखिर ये विडम्बना क्यूँ?

कार्य शब्द सुनकर मेरे दिल में सवाल आते हैं। जब हम महिलाएं घर का काम करती हैं– बर्तन धोना, कपड़े धोना, साफ–सफाई करना तो घर वालों को दिखाई नहीं देता। वो बोलते हैं कि क्या करती हो घर में रह कर। अगर वो ही काम हम किसी और के घर पर जा कर करते हैं तो उस काम के हमें पैसे मिलते हैं। तब हमारे घर वाले भी बोलते हैं कि मेहनत करके आई है और कमाई देखकर घर वाले खुश होते हैं और उनके आगे हमारी इज्ज़त बढ़ती है। आखिर ये विडम्बना क्यूँ?

• खुशी, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

तोडनी होंगी सारी बंदिशें

दुनिया बोलती है कि तू एक लड़की है और तू वही काम करेगी जो तुझे बताया जाएगा। तुझे खाना बनाना पड़ेगा, बर्तन धोने पड़ेंगे। वो कहती है कि तू एक बोझ है, तू पराया धन है। मैं ऐसा मानती हूँ कि हमारे आगे न बढ़ने के पीछे ये समाज ही ज़िम्मेदार है। हम लड़कियों को समाज की रोक–टोक, ऊँच–नीच की सारी पाबंदियों को तोड़कर अपने मन से अपना जीवन जीना होगा।

• ललिता पाल, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, जयपुर

अपने फैसलों पर अधिकार

अगर कोई महिला बाहर काम करती है तो उसे सम्मान की नज़रों से देखा जाता है। लेकिन अगर वही महिला केवल घर का काम करे तो उसके काम को काम नहीं समझा जाता। घर पर काम करने वाली महिला को कम आँका जाता है। अगर वो घर के फैसलों में कुछ बोले तो उससे कहा जाता है– "तुम्हारी औकात क्या है जो तुम इतना बोल रही हो? न तुम पढ़ी लिखी हो।" पर आज वही महिला घर से बाहर निकल रही है, अपना भविष्य बना रही है, पैसे कमा कर अपनी पहचान बना रही है और अपने फैसले खुद ले रही है।

• दीपाली, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नॉर्थ दिल्ली

सूरज, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, दिल्ली

अमन की दास्ताँ

मैं बचपन से बहुत हमदर्द था। मैंने अपनी माँ के दुख और कठिनाई को समझा और उनके बोझ को कम करने के लिए मैंने उनकी घर के कामों में मदद की। घर के कामों को औरतों का काम समझने वाले मेरे दोस्तों ने मेरा औरताना, हिजड़ा, छक्का कहकर मज़ाक बनाया। लेकिन मैं फिर भी स्कूल जाने से पहले खुद खाना परोसता और बर्तन साफ करता, स्कूल से लौटने के बाद कपड़े धोता, पानी भरने जाता और माँ की मदद करता।

धीरे–धीरे मैंने अपने दोस्तों को भी समझाया कि घरेलू काम केवल महिलाओं का काम नहीं है– लड़कों और पुरुषों को भी ये करना चाहिए। उन्हें समझाना न तो आसान काम था और न ही यह एक दिन में हुआ। लेकिन अंततः मैं उनके विचारों को बदलने में सफल रहा और मेरे मित्र भी अपने इलाकों में लोगों के विचारों को बदलने में सक्षम हुए।

● अमन कविथिया, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, कोलकाता

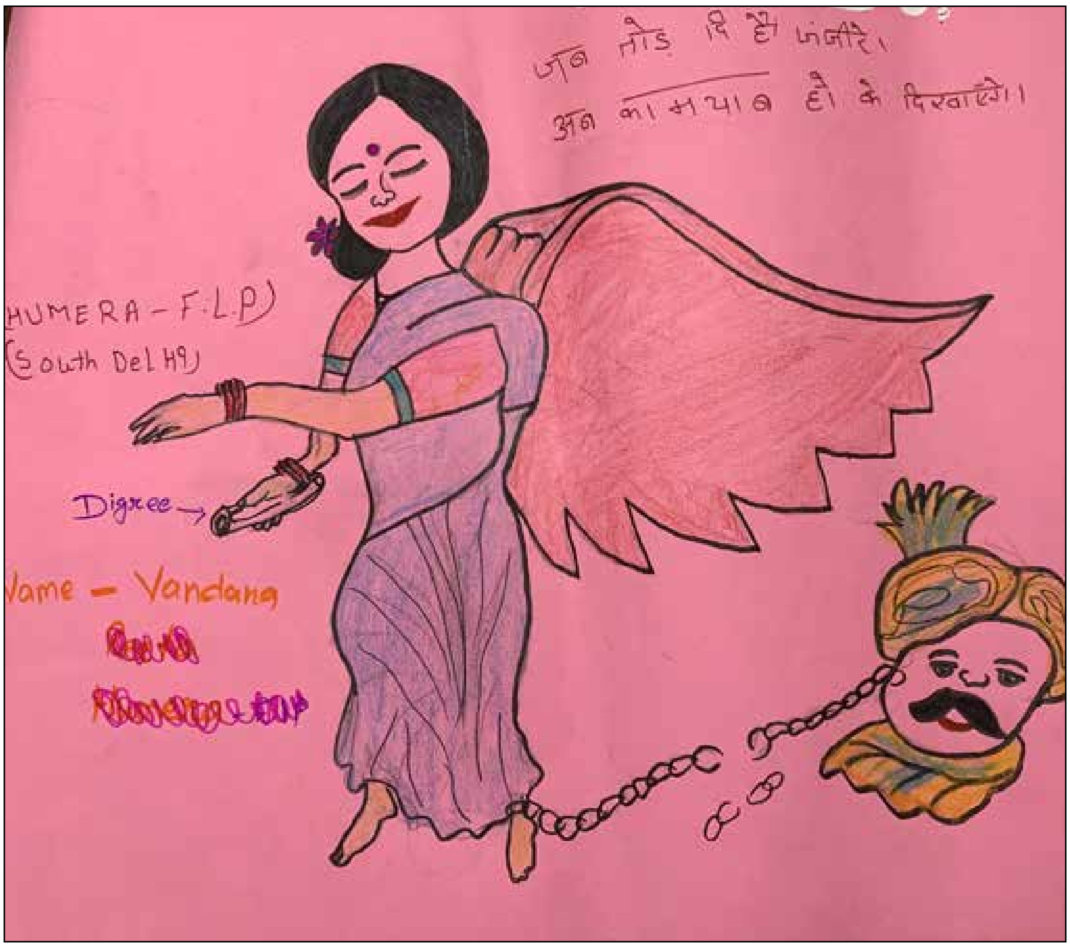

वंदना, फेमिनिस्ट लीडर, साउथ दिल्ली

जेंडर-जस्ट ईकोसिस्टम का निर्माण

मेरी माँ सुबह जल्दी उठती हैं, एक कप चाय पीती हैं, नाश्ता बनाती हैं और अपने लंबे दिन की शुरुआत करती हैं। पिछले 22 सालों से उनकी यही दिनचर्या है। आज भी महिलाओं से घर के सारे काम करने, बच्चों और परिवार की देखभाल करने की अपेक्षा की जाती है। कार्यस्थल में महिलाओं को कम वेतन दिया जाता है और उनके परिवारों में उनके काम और श्रम को कम करके आंका जाता है। कार्यस्थल पर उन्हें यौन उत्पीड़न और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। हमें अपनी विचार प्रक्रिया को बदलना होगा ताकि हम एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण कर सकें जिसमें सभी महिलाएं एक समतामूलक समाज में रह सकें।

● सुभ्रोजीत संतरा, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, कोलकाता

सोच बदल- ज़माना बदलेगा

एक आम महिला सुबह उठने से रात के सोने तक अनगिनत काम करती है। अगर हम यह कहें कि घर संभालना दुनिया का सबसे मुश्किल काम है तो शायद गलत नहीं होगा। दुनिया में सिर्फ यही एक पेशा है जिसमें 24 घंटे, सातों दिन हम महिला काम करती हैं। हर डेडलाइन को पूरा करते हैं वह भी बिना छुट्टी के। इतने सारे कार्य के बदले कोई मेहनताना भी नहीं लेतीं। उसके परिश्रम को सामान्य घर का काम–काज कहकर विशेष महत्व भी नहीं दिया जाता। मैं चाहती हूँ ये स्थिति बदले और महिलाओं और पुरुषों दोनों के काम को बराबर सम्मान मिले और दोनों को ही घर व बाहर का काम करने का अधिकार हो।

● निशा, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, ईस्ट दिल्ली

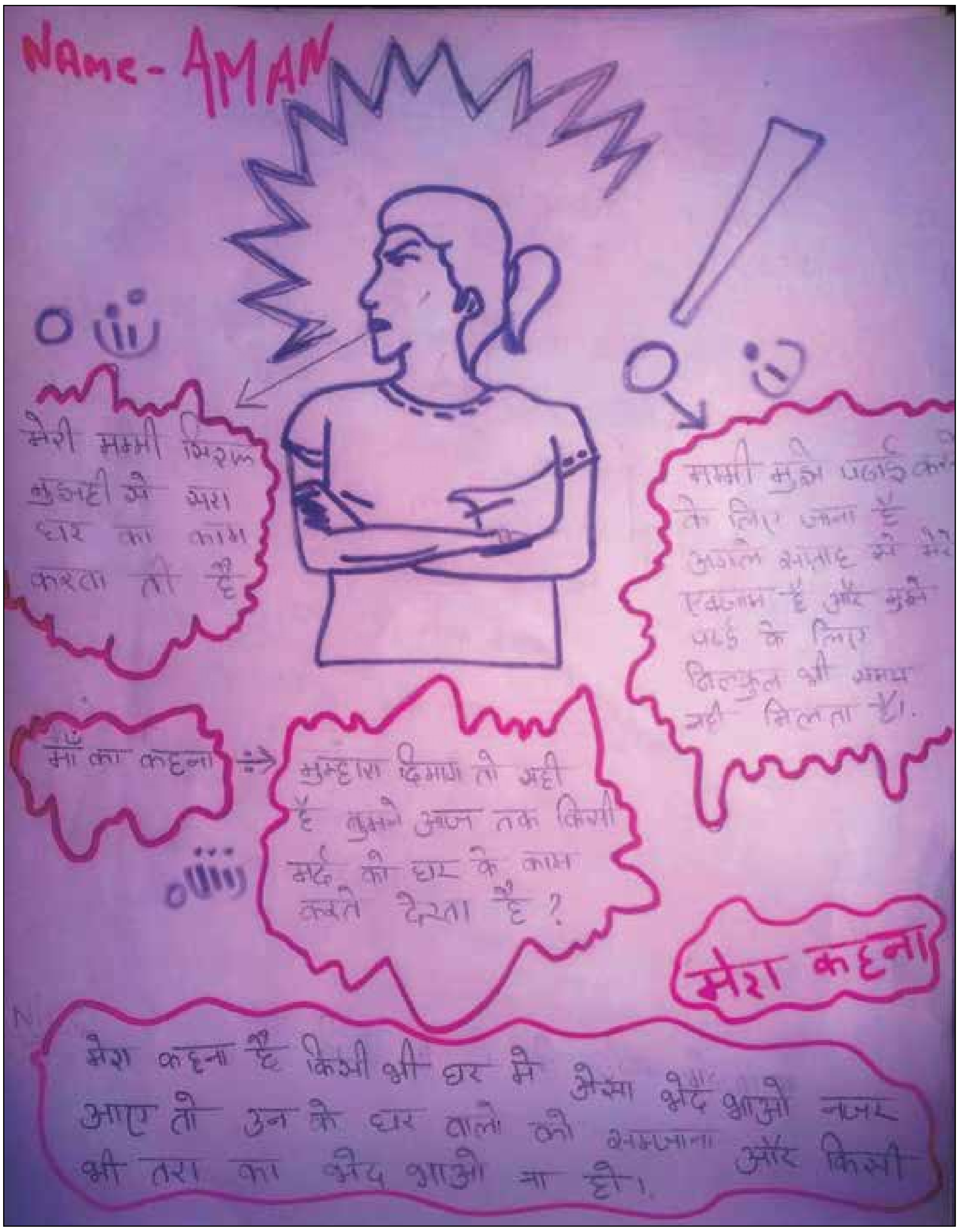

अमन, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, दिल्ली

अमन, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, दिल्ली

हालाँकि कार्यस्थल में महिलाओं की संख्या बढ़ रही है परन्तु कार्य पर महिलाओं के साथ काफी भेदभाव होता है। महिलाओं को पुरुषों की तुलना में समान वेतन भी नहीं दिया जाता। इसलिए हमें महिलाओं के समान वेतन के अधिकार के लिए लड़ना होगा।

• जाह्नवी, आज़ाद किशोरी लीडर, दिल्ली

हर महिला मांगे स्वच्छ सार्वजनिक शौचालय

सुरक्षित और साफ–सुथरे सार्वजनिक शौचालयों की अनुपलब्धता एक बड़ा मुद्दा है और कई महिलाओं के ड्राइविंग छोड़ने और इस तरह के काम न करने का कारण है। समाज चाहता है कि महिलाएं कमज़ोर हों और कम आय कमाएं ताकि वे निर्भर रहें और इसलिए वे नहीं चाहते कि महिलाएं गैर–पारंपरिक रोज़गार को अपनाएं। मुझे लगता है कि महिलाओं को एक साथ आना होगा और सरकार और स्थानीय प्रशासन के सामने सुरक्षित और स्वच्छ सार्वजनिक शौचालयों के लिए आवाज़ उठानी होगी।

• हेमलता, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, चेन्नई

समान शिक्षा के अवसर

अभी तक महिलाओं को उनके अपने परिवार और समाज द्वारा कई कारणों से दबाया तथा उनके साथ कई प्रकार की हिंसा भी होती है। और परिवार और समाज में भेदभाव भी किया जाता है। महिलाओं पर बाहर न जाने की भी रोकटोक लगाई जाती है। महिलाएं शिक्षा के मामले में भी पुरुषों से पीछे है। और उनकी जल्दी शादी कर देते है। लेकिन इसे हम तभी बदल सकते हैं जब हम असमानता को दूर कर पाएं और महिलाओं को भी पुरुषों के समान शिक्षा मिले।

• खुशी, फेमिनिस्ट लीडर, जयपुर

क्यूँ एक लड़के और लड़की में भेदभाव किया जाता है?

क्यूँ एक लड़की को पिंजरे में कैद कर दिया जाता है?
क्यूँ उसका कोई घर नही होता, क्यूँ उसे पराया कहा जाता है?
क्यूँ एक लड़के और लड़की में भेदभाव किया जाता है?
क्यूँ लड़की को आगे पढाया नहीं जाता? क्यूँ चूल्हे के आगे बिठा दिया जाता है?

इस समाज में क्यूँ लड़को को रोने का हक नहीं होता?
अगर एक लड़का रोए तो उसे लड़की करार दिया जाता है।
क्या लड़कों को दर्द नहीं होता, क्या उन्हें गम का एहसास नहीं होता?
आखिर क्यूँ एक लड़के और लड़की में भेदभाव किया जाता है?

• अलीना बानो, आज़ाद किशोरी लीडर, जयपुर

मैं एक औरत हूँ

अगर आप मुझे देखते हैं और सोचते हैं कि मैं अकेली हूँ,
ये आपकी नहीं, पितृसत्तात्मक सोच की गलती है।
मैं आपको याद दिला दूं कि मैं कोई वस्तु नहीं हूँ
न मैं कोई टीला हूँ, न कोई कुआँ हूँ।
मैं एक समुद्र और आकाश की तरह हूँ- विशाल और खुला
मैं ऊबड़-खाबड़ इलाके की तरह हूँ।
आप सब मुझे मौन समझते हो
आप सब सोचते हो कि मैं बंधी हुई आशा हूँ।
लेकिन अगर आप ऐसा सोचते हैं तो आप गलत हैं।
मैं शेरनी की तरह दहाड़ सकती हूँ।
न मैं अकेली हूँ और न ही किसी एक किरदार में सिमटी हुई हूँ,
मैं बेहद मज़बूत हूँ और अलग-अलग भूमिकाओं में अपना जीवन जीती हूँ।
मैं अकेली नहीं हूँ, मैं एक औरत हूँ।

• अमृता मंडल, फेमिनिस्ट लीडर, नॉर्थ कोलकाता

लोगों को बस कहने दे

तो लोगों को बस कहने दे,
साथ चलें न चलें उन्हे रहने दे।
कुछ ख्वाब ही देखे होंगे तूने सही,
तो इन परिंदो को सपनो के संग बहने दे।
और ये सिलसिले पूरे करने है तुझे
अपनी मंज़िल को छू ले तू,
और लोगों को बस कहने दे।

• प्रिंस, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, दिल्ली

राजकुमारी, फेमिनिस्ट लीडर, साउथ दिल्ली

सरस्वती, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नार्थ दिल्ली

#एम्ब्रेस इक्विटी पोज़ में वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, ईस्ट दिल्ली

#एम्ब्रेस इक्विटी पोज़ में वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नॉर्थ दिल्ली

माँ चाहिए...
पत्नी चाहिए...
बहन चाहिए...
फिर बेटी क्यूँ नहीं चाहिए?

• शिवम, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, दिल्ली

आगे बढ़ते जाना है,
महिलाओं को सशक्त बनाना है।

• बीना, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ दिल्ली

आज़ादी सबके लिए...

आज़ादी मेरी नज़र में है स्वच्छंद विचारों का होना,
जहाँ महके फूलों की तरह मन का हर कोना।
भाव अपने कर सकें सब व्यक्त,
आवाज़ रहे सबकी बुलंद हर वक्त।
डर न हो किसी के भी मन में, शान्ति हो जग भर में।
उद्विग्न रहे जब मन कोई, कैसी आज़ादी जब खुश नहीं कोई?

• पलक, आज़ाद किशोरी लीडर, दिल्ली

सुरक्षित कार्यस्थल

मैं कॉल सेंटर में काम करती थी तो कुशलता से काम करने के बाद भी मेरे बॉस की मांग पूरी न करने के कारण मेरा प्रमोशन रद्द कर दिया गया। बाद में उनके खराब व्यवहार के कारण मुझे अपनी नौकरी छोडनी पड़ी। मैं एक ऐसा कार्यस्थल चाहती हूँ, जहां महिलाओं को उनकी क्षमता के आधार पर आंका जाए, न कि उनकी गरिमा से खिलवाड़ करके।

• प्रीति बसक, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नॉर्थ कोलकाता

महिला स्वतंत्रता सामाजिक स्वतंत्रता की आह है।
स्वतंत्रता जो चाहो वो बनने का मज़ा है।
खुशी का रहस्य स्वतंत्रता है।
स्वतंत्रता का रहस्य परिवर्तन है।
न हटूं पीछे अब यही मेरा सपना है।

• नेहा खान, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, ईस्ट दिल्ली

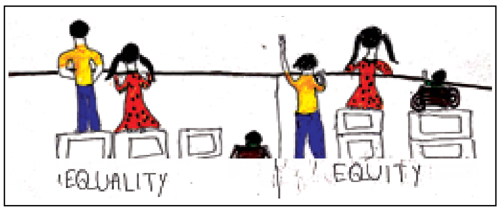

प्रियंका पात्रा, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नॉर्थ कोलकाता

चंपा गेयन, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

मातृत्व अवकाश का महत्त्व

अधिक महिलाओं को गैर पारंपरिक आजीविका अपनाने के लिए उनके लिए अधिक पारिवारिक और सामाजिक समर्थन की आवश्यकता है। कई क्षेत्रों में महिलाएं नौकरी जारी नहीं कर पाती क्योंकि उन्हें बच्चों की देखभाल करनी होती है और मातृत्व अवकाश नहीं होता है। इसलिए, मातृत्व अवकाश महिलाओं के लिए हर काम का हिस्सा होना चाहिए ताकि माँ बनने के बाद उन्हें नौकरी न छोड़नी पड़े।

• रेखा, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, चेन्नई

न अबला न बेचारी है।
ये आज के युग की नारी है।
कम उसको मत आंको
ये सारे जग पर भारी है
न अबला न बेचारी है।

• गोलू, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, दिल्ली

जब है नारी से शक्ति सारी तो फिर
क्यूँ नारी को कहें बेचारी?
जब तोड दी है जंज़ीर, तो अब
कामयाब हो के भी दिखाएगी।

• वंदना, फेमिनिस्ट लीडर, साउथ दिल्ली

हमारी मांगें!

महिलाओं को पुरुषों के समान वेतन मिले। महिलाओं के लिए सुरक्षित और साफ शौचालय की सुविधा हो। महिलाओं को पुरुषों के समान कार्य के अवसर मिलें। महिलाओं को सुरक्षित कार्यस्थल मिले।

महिलाओं को अपनी कमाई खुद खर्च करने का अधिकार हो।

• खालिदा खातून, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नॉर्थ कोलकाता

तुम उड़े चलो...

तुम परिंदो सी आज हो...
इन हवाओं में पंख फैलाए उड़ चलो...
ऊँचाई काफी है इस आसमान की
तुम आज़ाद पंछी, उड़ती चलो...
मंज़िल भले दूर लगे तुम्हें,
तुम अपने कदम बढ़ाए चलो...
तुम उड़े चलो...तुम उड़े चलो...

• देवेन्द्र सिंह, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, जयपुर

कोलकाता में आज़ाद व मैत्री द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस अभियान

चेन्नई में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस अभियान

दिल्ली व जयपुर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस अभियान

महिलाओं के अधिकार- मानव अधिकार

महिलाओं और लड़कियों के अधिकार मानव अधिकार हैं। वे जीवन के हर पहलू को कवर करते हैं– स्वास्थ्य, शिक्षा, राजनीतिक भागीदारी, अर्थव्यवस्था, कल्याण और हिंसा से मुक्ति।

● पिया पासवान, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ कोलकाता

न रोक सकेगा तुझको कोई गर तू हिम्मत कर लेगी, हर मंज़िल मिल जाएगी जब तू निडर हो चल देगी। सफर शुरू कर तू अपना हर डर पर जीत पाएगी, मुश्किलें बेशक आएंगी, पर देख तेरा साहस खुद राह से हट जाएंगी।

● शोभा, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

घर से बाहर निकलते वक्त बेटी के लिए ही इतनी चिंता क्यूँ? हमें स्वयं से पूछना चाहिए कि बेटी को किस से खतरा है? हमें अपनी बीमार मानसिकता का इलाज करना होगा, तभी एक बराबर समाज बनेगा।

● हसीना, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, जयपुर

पाठकों के लिए विशेष सूचनाः आप में से जो भी इस न्यूज़लेटर के लिए लिखना चाहते हैं, अपनी कहानी, कोई रोचक अनुभव, सन्देश या ख़ास खबर, चित्र, फोटो, शेर–ओ–शायरी, गीत–चुटकुला, विचार या चिंताएं सबके साथ बांटना चाहते हैं तो नीचे दिए पते पर संपर्क करें।

संपादकः शिखा डिमरी और रुबीना अज़ीज़

अन्य सहयोगीः अनामित्रा मुख़र्जी

आर–10, फ्लैट नं. 7, दूसरी मंज़िल, नेहरू एन्क्लेव, कालका जी,
नई दिल्ली–110019
फोन : 011–49053796 • वेबसाइट : www.azadfoundation.com

www.azadfoundation.com
@azadfoundationIndia
@azadfoundationIndia
@FoundationAzad

हेल्पलाइन नंबर

पुलिस – 100 / 112
फायर ब्रिगेड – 101
एम्बुलेंस – 102
विमेंस हेल्पलाइन नंबर – 1091
घरेलु हिंसा हेल्पलाइन नंबर – 181
स्टूडेंट / चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर – 1098

-: डिस्क्लेमर :-
आज़ाद फाउण्डेशन और सखा दो अलग-अलग संस्थाएँ हैं।
आज़ाद एक एन.जी.ओ. है और सखा एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी।

स्त्री की सुंदरता

महिलाओं की सुंदरता का वर्णन मत करो। उसकी बुद्धि और ज्ञान का वर्णन करो। यही उसकी पहचान है। स्त्री के शारीरिक सौन्दर्य का वर्णन करना गलत है। उसकी बुद्धिमत्ता और साहस का वर्णन करो।

मुझे एक महिला के बारे में जो सुंदर लगता है वह उसका आत्मविश्वास, दृढ़ता, बहादुरी, ज्ञान और स्वाभिमान है।

यदि हम इन पर प्रकाश डालें तो महिलाओं का जीवन बेहतर होगा।

● एम. गायत्री, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, चेन्नई

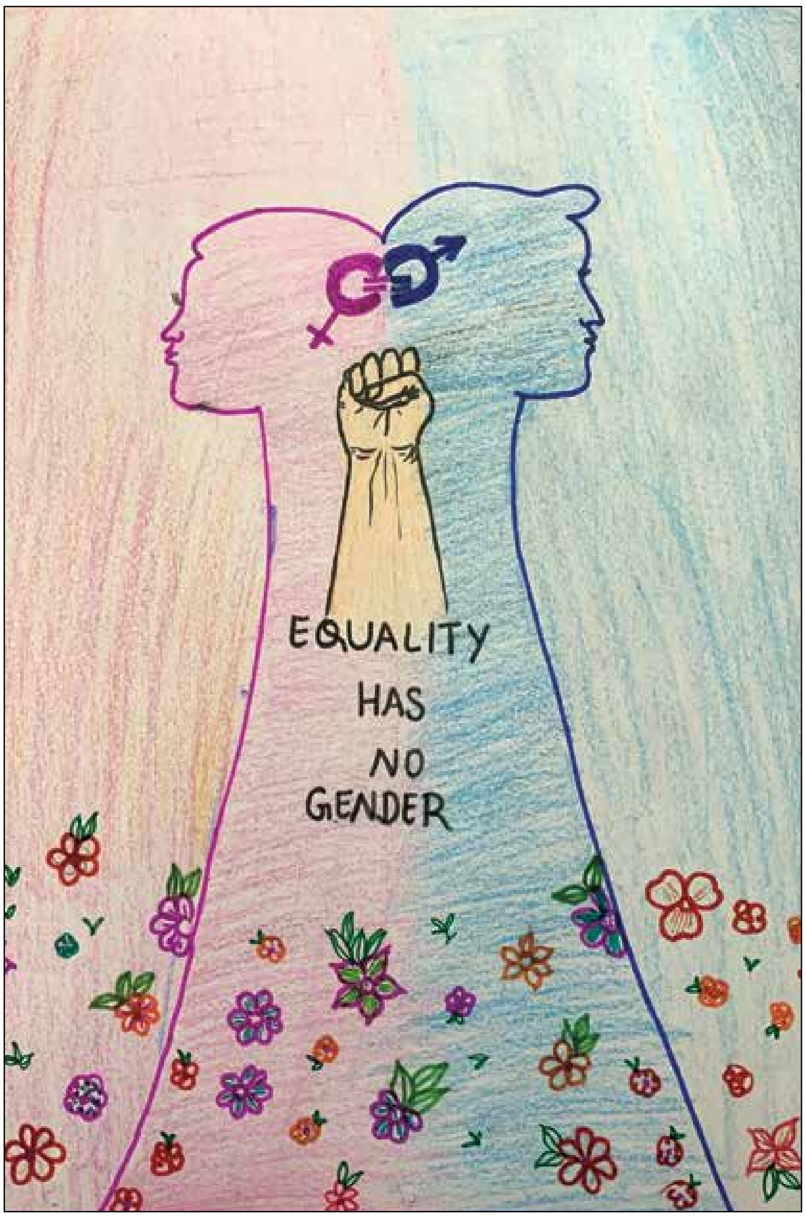

संतोष, फेमिनिस्ट लीडर, साउथ दिल्ली